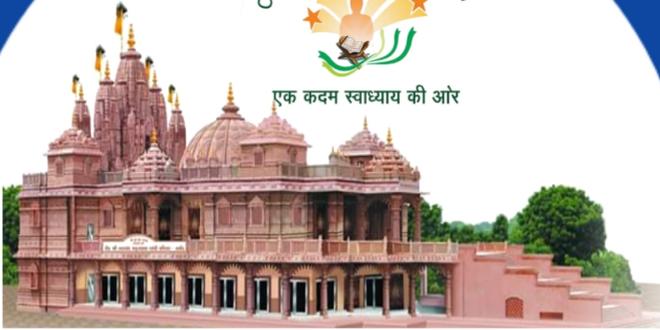




एक कदम स्वाध्याय की ओर



भारतजुं गौरवतु तीरुव स्थान

"चैतन्य धाम"

चैतन्यजी चैतन्यो चैतन्यं रामानुजं धाम

## नन्दीश्वर द्वीप-पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

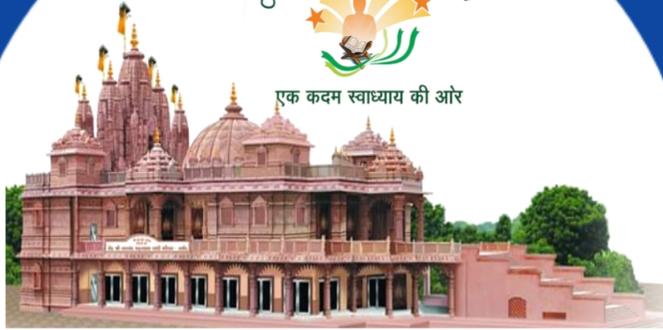
(अडिल्ल)

सरब परव में बड़ो अठाई परव है ।  
नन्दीश्वर सुर जांहिं लेय वसु दरव है ॥  
हमें सकति सो नाहिं इहाँ करि थापना ।  
पूजैं जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-  
जिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-  
जिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-  
जिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।



भारतजुं गुरवतु तीरुव स्थल

"चैतन्य धाम"

चैतन्यकी चेतनानु वेतनयंतु रामकानुं धाम

(अवतार)

कंचन-मणि-मयभृंगार, तीरथ-नीर भरा ।  
तिहुं धार दयी निरवार, जामन मरन जरा ॥  
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों ।  
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-  
जिनप्रतिमाभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव-तप-हर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं ।

प्रभु यह गुन कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं ॥ नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः संसारतापविनाशनाय  
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।



भारतजुं गुरवतु तीरुव स्थल

"शैतलुध धलतु"

शैतलुध धलतुधु शैतलुध धलतुधु

उतुतत अकुषत जलनरलक, डुंक धरै सुुुहै ।

सडु कलते अकुष-सडलक तुड-सड अरु कुु है ॥ ननुदी. ॥

ॐ हुरीं शुरी ननुदीशुवरदुवुरीडे दुवलडुंकलशकुकुनललडुस्थकुकुनडुरतलडुडुधुडु अकुषडुडुडुरलडुडुडे अकुषतलनु नलरुवडुडुडुडुडुडुडु सुवलहल ।

तुड कलड वलनलशक देव, धुडलकुं डुूलनसुुीं ।

लहुं शील-लकुषुडुडु डुव, कुुडुुु सुूलनसुुीं ॥

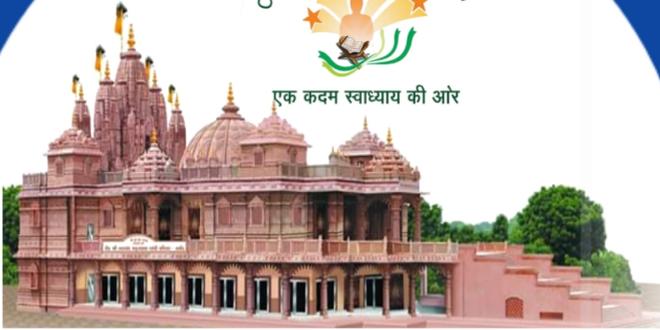
ननुदीशुवर-शुरीकुकुन-धलड, डलवन डुंक करुुीं ।

वसु डलन डुरतलडुडु अडुडुरलडु, आननुद-डुलव धरुुीं ॥

ॐ हुरीं शुरी ननुदीशुवरदुवुरीडे दुवलडुंकलशकुकुनललडुस्थकुकुनडुरतलडुडुधुडुः कलडडुलणवलधुवुंसनलडु डुषुडुं नलरुवडुडुडुडुडुडुडु सुवलहल ।



एक कदम स्वाध्याय की ओर



भारतजुं गौरवतुं तीरुव स्थल

"शैतल्य धाम"

शैतल्य धाम वेदतुं राभतुं धाम

नेवज इन्द्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा ।

चरु तुम ढिंग सोहैं सार, अचरज है पूरा ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं  
निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुम तन माहिं लसै ।

टूटै करमन की राशि, ज्ञान-कणी दरसै ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकार- विनाशनाय  
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

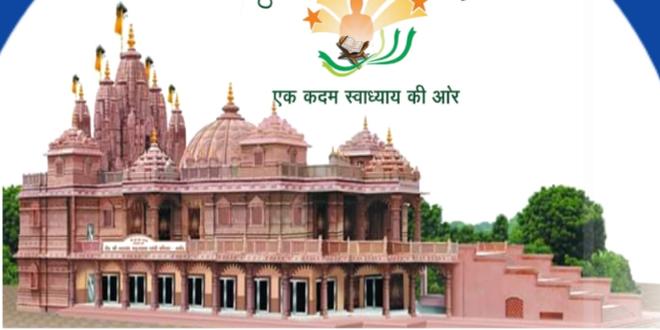
कृष्णागरु-धूप-सुवास, दश-दिशि नारि वरै ।

अति हरष-भाव परकाश, मानो नृत्य करै ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं  
निर्वपामीति स्वाहा ।



एक कदम स्वाध्याय की ओर



भारतजुं गुरुवतु तीरुव स्थल

"शैतलुध धलतु"

शैतलुध धलतु शैतलुध धलतु

बहुविधि फल ले तिहुं काल, आनन्द राचत हैं।

तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत हैं॥ नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं  
निर्वपामीति स्वाहा ।

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों।

‘द्यानत’ कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपतु हों॥ नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं  
निर्वपामीति स्वाहा ।

**जयमाला**

(दोहा)

कार्तिक फाल्गुन साढ़ के, अन्त आठ दिन माहिं।

नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं ॥





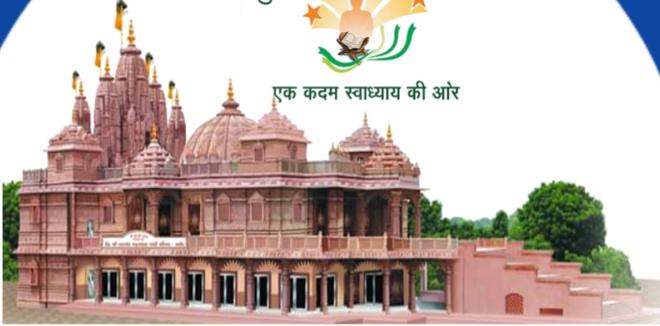


भारतजुं गुरवतु तीरुव स्थल  
"शुतुतु धलतु"  
शुतुतुतु शुतुतुतु शुतुतुतु धलतु

बलतुतु अठु एकु सुतु रतुनतुतु सुतुहही ।  
देव-देवुी सरवु नतुन तुन तुतुहही ॥  
तुतुतु सुतु धनुषु तनु तदुतु-आसुन तुरुं ॥तुतुन. ॥  
ललल नखु-तुखु नतुन शुतुतु अरु सुवेतु हें ।  
शुतुतु-रंगु तुतुह सुतर-कुशु छतुतु देतु हें ॥  
वतुन तुतुलतु तुनू हंतुतु कलतुषु हरुं ॥तुतुन. ॥



एक कदम स्वाध्याय की ओर



भारतजं गौरवतु तीर्थ स्थान

"शैतल्य धाम"

शैतल्य धामो वेत्तवतु रामकानुं धाम

कोटि-शशि-भान-दुति-तेज छिप जात है ।  
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है ॥  
वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यक धरं ॥  
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-  
जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

नन्दीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै ।  
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)